महर्षि जी द्वारा लिखित कुछ पुस्तकों के नाम तथा संशोधित मूल्य

क्रम	नाम	मूल्य वितरण
१.	हिन्दुस्तान में हिंसा और अहिंसा (प्रतियां समाप्त)	
२.	क्रिया-योग	५.००
३.	ओंकार-भजनावली (नये भजनों के साथ)	१०.००
४.	सुख-दु:ख	५.००
५.	ओङ्कार-वचनामृत	५.००
६.	शिवपुराण एवं ओंङ्कारोपासना	१०.००
७.	हम ओम् की उपासना क्यों करें ?	२.००
८.	परमलक्ष्य और उसकी प्राप्ति	१५.००
९.	उपासना योग पर एक विचार	२५.००
१०.	प्रणव-पूजन-पद्धति:	२०.००
११.	प्रणव पञ्च मालिका	२५.००
१२.	नारी-अधिकार, गुण, गरिमा	१०.००
१३.	माया-मोह की कथा	२५.००
१४.	उत्तङ्क ऋषि की कथा	५.००
१५.	वीर पिता का वीर पुत्र की कथा	५.००
१६.	संक्षिप्त प्रणव-पूजन पद्धति:	३.००
१७.	ईशोपनिषद का सरल संक्षिप्त परिचय	५.००
१८.	वेदों में पुरूष सुक्त	५.००
१९.	वैदिक गन्धर्व और अप्सरायें	५.००
२०.	प्रणव-पूजन-पद्धति: की बृहद व्याख्या	३०.००
२१.	गौरीशंकर राम के उपासक नहीं ओंङ्कार के उपासक थे	५.००
२२.	एक महत्वपूर्ण पत्र का उत्तर	२.००
२३.	वैदिक-देव शंङ्कर, वेदोक्त, ओंङ्कारोपासना के आदि शिक्षक हैं	५.००
२४.	मैंने क्या देखा	५.००
२५.	भ्रांतिनिवारण	५.००
२६.	ओंङ्कार-चालीसा एवं ओंङ्कार-कवच	५.००
२७.	अथवर्वेद का एक सरल संक्षिप्त परिचय	१००.००
२८.	ओम् तथा शिव और कृष्ण	५.००
२९.	समर्पण	५.००
३०.	क्या ओम की पूजा शास्त्रों द्वारा प्रमाणित है ? (प्रवचन)	२.००
३१.	महर्षि ओंङ्कारानन्द जी की संक्षिप्त जीवन झांकी।	५.००
३२.	वैदिक उपदेश	५.००
३३.	संक्षिप्त उपनिषद परिचय	१०.००
३४.	प्रश्नोपनिषद	१०.००
३५.	मुण्डकोपनिषद	१०.००
३६.	कैनोपनिषद	१०.००
३७.	माण्डूक्योपनिषद	१०.००
३८.	An exposition on the Yoga of Devotion	५०.००
३९.	ऊँ की प्रतिमा, फोटो, रुद्राक्ष की माला, शंकर जी एवं महर्षि जी का फोटो	

पता-प्रकाशन विभाग, ओंकार आश्रम, पत्रालय-बालापार, गोरखपुर - २७३००७

ओङ्कार-भजनावली

रचयिता
महर्षि ओङ्कारानन्द सरस्वती

श्रीमती यशोधरा देवी

पत्नी : स्व० पाटेश्वरी प्रसाद

पता : ७०६-डी, स्वामी दयानन्द नगर, शास्त्रीनगर,
गोरखनाथ, गोरखपुर (पुराना पता : परसा, सिद्धार्थनगर)

प्रकाशक

महर्षि ओङ्कारानन्द प्रणव मन्दिर समिति,
(प्रकाशन-विभाग)

प्रणव मन्दिर, ओङ्कार-आश्रम
ग्राम : बैजनाथपुर, पत्रालय : बालापार, जनपद गोरखपुर
(उ०प्र०)

सर्वाधिकार स्वरक्षित

नवम् संस्करण
2016

निवेदन

''इस संस्करण के सम्बन्ध में''

ओङ्कार भजनावली का पहला संस्करण १९५६ ई० में, दूसरा १९६९ ई० में, तीसरा १९७२ ई० में, चौथा १९७६ ई० में, पांचवां १९७९ ई० में, छठवां संस्करण १९८४ में, सातवां १९९९ तथा आठवां २००० में निकाले गये थे। यह नौवां संस्करण इस वर्ष २०१६ में निकाला जा रहा है। ब्रह्मलीन पूज्यपाद महर्षि ओङ्कारानन्द सरस्वती द्वारा प्रचारित प्रणवोपासना के साथ-साथ इस भजनावली की आवश्यकता भी अधिक होती जा रही है। भगवान् ओङ्कारेश्वर की पूजा, भजन कीर्तन को नर-नारी बहुत संख्या में अपना रहे हैं। इस भजनावली की एक प्रति भी अब कार्यालय में नहीं रह गयी है, अतः इसे शीघ्र प्रकाशित कराया जा रहा है। इस नौवें संस्करण की विशेषता यह है कि इसमें महर्षि जी द्वारा रचित कई नवीन भजन, कीर्तन जो भजनावली में अभी तक नहीं छपे थे, उन्हें भी दे दिया गया है। आशा है, इस नये संस्करण से ओंकार उपासकों को और अधिक आनन्द और तृप्ति मिलेगी।

जुलाई २०१६

निवेदक :

महर्षि ओङ्कारानन्द प्रणव मन्दिर समिति,

(प्रकाशन-विभाग)

ग्राम : बैजनाथपुर, पत्रालय : बालापार, जनपद गोरखपुर

विषय-अनुक्रमणिका

भजन सं0	भजन	पृष्ठ सं0
(१)	गावें हम मंगल ओ३म् गान	१
(२)	गुरु वन्दना	१
(३)	ओ३म् - गुणगान	२
(४)	ओ३म् जप, ओ३म् जप	२
(५)	दीनन के हृदय पुकार रहे। ओङ्कार हरे, ओङ्कार हरे।।	३
(६)	विश्वपति ईश्वर करूणाधाम	४
(७)	तुम शङ्कर हो, शिव शङ्कर हो	५
(८)	जय शिव ओंकारा	६
(९)	मेरे ओङ्कार तुम मेरा सहारा बन के आ जाओ	७
(१०)	कदम कदम बढ़ाये जा	७
(११)	मैं किस विधि ब्रह्म बताऊँ ?	८
(१२)	ओ३म् शङ्कर प्रणव गान	९
(१३)	है ओमेश्वर पिता सबका	१०
(१४)	मैं चला मिलन की आश लिये	११
(१५)	ओ३म् की उपासना क्यों न हम हैं कर रहे ?	११
(१६)	क्यों लड़ता मूरख बन्दे जब चाह उसी 'ओङ्कार' की है।	१२
(१७)	दुनियां यह दुःख की गीता, किसको सुना रही है।	१४
(१८)	दीदार उस दिलदार की	१५
(१९)	प्रणव प्रभु के प्रेम में	१५
(२०)	प्राणों से बढ़के प्यारा, ओङ्कार है हमारा	१६
(२१)	योगी जन गावत ओङ्कार	१६
(२२)	बन्दों घट-घट के वासी	१७
(२३)	कीर्तन-हरि ओम् तत्सत्	१७
(२४)	कीर्तन - ओम् की ध्वनि लगे	१८
(२५)	कीर्तन - सांसें सांसे ओ३म् नाम, बोल रे बन्दे।	१८
(२६)	उड़ जा हंसा देश	१९
(२७)	रथ - परिवर्तन	१९
(२८)	प्रेमरूपा भक्ति (नारदमुनि कृत का भोजपुरी सारांश)	२१
(२९)	कीर्तन - ओ३म् गुरु ईश्वर	२४
(३०)	ओम् - शंकर की आरती	२४
(३१)	ओङ्कार की आरती	२५
(३२)	शान्ति पाठ	२६

ॐ

ओङ्कार भजनावली

(१) गावें हम मंगल ओ३म् गान

हे पूर्ण ब्रह्म मेरे महान ! सुख शान्ति का मंगल दान ।
मम दयाकर कर दो प्रदान । गावें हम मंगल ओ३म् गान ।। 1 ।।
बहु विधि भजें ओ३म् नाम । आरम्भ करें, निज मंगल काम ।
उर मध्य धरें, ओ३म् ध्यान । गावें हम मंगल ओ३म् गान ।। 2 ।।
ओङ्कार, पूर्ण यह नाम । आदि अन्त पूर्ण हो काम ।
हे मंगलकारी ! पूज्यमान् । गावें हम मंगल ओ३म् गान ।। 3 ।।

❐❐❐

(२) गुरु वन्दना

हे मेरे गुरु देव ! करुणा सिन्धु करुणा कीजिए।
शरणागत इस दास को गुरुवर्य्य शरण अब दीजिए।।
हे मेरे गुरुदेव !.......

दुर्दशा पर दास के अब ध्यान गुरुवर दीजिए।
त्रिदु:खों से आप ही भगवान बाहर कीजिए।।
हे मेरे गुरुदेव !.......

मानता हूँ, हूँ अधम अज्ञानी वो कमजोर हूँ।
पर गुरु तेरे चरण से युक्त हूँ पुर-जोर हूँ।।
हे मेरे गुरुदेव !.......

ऐसा अनुग्रह हे गुरो ! इस दास पर अविलम्ब हो।
फांस माया के कटें, उपलब्ध भक्ति हो प्रभो।।
हे मेरे गुरुदेव !.......

ज्ञान ऐसा दो गुरो जो ओम् को दर्शा सके।
तुममें, मुझमें, ओम् में उस एकता को पा सके।
हे मेरे गुरुदेव !.....

❐❐❐

(३) ओ३म् - गुणगान

विश्व जो है दिखता, ओ३म् का प्रसार है।
भूत भव्य आज भी, ओ३म् का प्रचार है।।
है यही अनादि नाद, शब्दब्रह्म सार है।
गति-सहित प्राण के, प्रवाह का यह तार है।।
तरंङ्ग विश्वव्यापि जो, अदृष्ट वो अरूप है।
निर्विवाद ओम् एकाक्षर का वह रूप है।।
ओत-प्रोत ओ३म् में, जीव वो निर्जीव है।
है यही ब्रह्मरूप, विष्णु और शिव है।।
आनन्दरूप है यही, जीव का यह लक्ष्य है।
है यही उपास्यदेव, ज्ञान में जो दक्ष्य है।।

❐❐❐

(४) ओ३म् जप, ओ३म् जप

ओ३म् जप, ओ३म् जप, ओ३म् जप भाई रे।
कर ले कमाई, शुभ कर ले कमाई रे।।
ओ३म् जप ... ...
ओ३म् नाम शुद्ध नाम, चित्त हर्षाई रे।
ओ३म् जपत योगी, मुक्ति पथ पाई रे।।
ओ३म् जप ... ...

ओ३म् ज्ञान परम ज्ञान, चतुर अपनाई रे।
ओ३म् ही को सत्य मान, मोह बिसराई रे।।
ओ३म् जप ... ...
भक्तों का ओ३म् त्राण, परम सुखदाई रे।
वेदों का मूल ज्ञान, विश्व में समाई रे।।
ओ३म् जप ... ...
ओ३म् जप ! ओ३म् जप ! ओङ्कार समझाई रे।
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सब कुछ तू पाई रे।।
ओ३म् जप ... ...

❐❐❐

(५) दीनन के हृदय पुकार रहे। ओङ्कार हरे, ओङ्कार हरे।।

जब संकट घिर-घिर आते हैं
सुख शान्ति नहीं हम पाते हैं।
हो संकटमोचन, ध्यान रहे,
ओङ्कार हरे, ओङ्कार हरे।। दीनन के .....
दीनन के प्रतिपालन को,
डगमग नाव, संभालन को,
हो दीन बन्धु पतवार धरे,
ओङ्कार हरे, ओङ्कार हरे।। दीनन के .....
हम फंसे हुए जंजालों में,
तुम रक्षक हो, सब कालों में।
तुम बिन कौन, उद्धार करे,
ओङ्कार हरे, ओङ्कार हरे।। दीनन के .....
हे शान्ति निकेतन ! प्रेम निधे !
तुम कण-कण में हो, रमे हुए!

(४)

हो शुद्ध नहीं हम पाप करें,
ओङ्कार हरे, ओङ्कार हरे।। दीनन के .....
हम प्रेम सूत्र में, बंध जावें,
निज बैर भाव, सब बिसरावें।
मिल जुल, निर्मल गान करें,
ओङ्कार हरे, ओङ्कार हरे।। दीनन के .....
''ओङ्कार'' तुझे, अपनाने को
सुख शान्ति सदा ही पाने को
हम आश धरे, उच्चार रहे
ओङ्कार हरे, ओङ्कार हरे।। दीनन के .....

❐❐❐

(६) विश्वपति ईश्वर करूणाधाम

विश्वपति ईश्वर करुणा धाम।
पतित पावन तेरा नाम।।
दीन बन्धु तू दीनानाथ।
सबको सुख दो हे विश्वनाथ।।
विश्वपति ... ...
सब के स्वामी सब के ताज।
शरण पड़ा अब रखो लाज।।
विश्वपति ... ...
तुम हो रक्षक, तुम जगपाल।
अन्तर्यामी तुम रखवाल।।
विश्वपति ... ...
करुणा सागर मुक्ति धाम।
मनहर तेरा सुन्दर नाम।
विश्वपति ... ...

(५)

राजा, रंक के तुम करतार।
पापी सन्त के पालन हार।।
विश्वपति ... ...
हम तेरे बालक हैं अज्ञान।
कृपा करो हे कृपा निधान।।
विश्वपति ... ...
विनती सुन लो हे ओङ्कार।
सबका भला करो करतार।।
विश्वपति ... ...

❐❐❐

(७) तुम शङ्कर हो, शिव शङ्कर हो

तुम शंकर हो, शिव शंकर हो, तुम स्वयंभू हो कैलाश पति।
तुम पशुपति तुम गंगपति तुम परिभू हो तुम उमापति।।
तुम शंकर हो, शिव शंकर हो .....
तुम रुद्रदेव तुम विश्वदेव तुम भूत देव तुम प्रजापति।
अघोर देव, ईशान देव तुम वाम देव तुम मोक्ष पति।।
तुम शंकर हो, शिव शंकर हो .....
तुम अमर देव, तुम महादेव, तुम ज्योतिदेव, तुम मृत्युपति।
भविष्यदेव, तुम भव्यदेव, तुम गिरिदेव, तुम शैवपति।।
तुम शंकर हो, शिव शंकर हो .....
प्रचंड रोष, तुम हरत दोष, तुम करत पोष तुम प्रलयपति।
तुम आशुतोष, तुम वेद घोष, तुम देत कोष तुम दीनपति।।
तुम शंकर हो, शिव शंकर हो .....
तुम सौम्य रुप, तुम ज्ञान रुप, तुम काल रुप, तुम कामपति।
तुम प्रणव रुप, तुम गुरु रुप, तुम कृपा रुप तुम संतपति।।
तुम शंकर हो, शिव शंकर हो .....

❐❐❐

(८) जय शिव ओंकारा

जय शिव ओंकारा, शिव ओंकारा शिवा शिवा।
हम अधम जीव तुम परम शिव करि परम दया।।
जय शिव ओंकारा .....
हम अधम जीव .....
अनादिदेव जय ज्योति देव जय दिव्य देव।
जय रुद्रदेव अघोर देव ईशान देव जय देव देव।।
जय शिव ओंकारा .....
हम अधम जीव .....
जय प्रणवदेव, उद्गीथदेव, जय ओमदेव।
जय भूतदेव, भविष्यदेव जय भव्यदेव।
जय शिव ओंकारा .....
हम अधम जीव .....
अद्वैतदेव अनन्तदेव, जय विश्व देव।
जय पशुदेव, जय गिरिदेव जय गंगदेव।।
जय शिव ओंकारा .....
हम अधम जीव .....
जय सृजन देव, जय प्राण देव जय प्रलय देव।
जय उमा देव, जय शैव देव, जय महादेव।।
जय शिव ओंकारा .....
हम अधम जीव .....
जय शिव ओंकारा शिव ओंकारा शिवा शिवा।
जय शिव ओंकारा शिव ओंकारा शिवा शिवा।।
जय शिव ओंकारा शिव ओंकारा शिवा शिवा।
जय शिव ओंकारा शिव ओंकारा शिवा शिवा।।
जय शिवा शिवा जय शिवा शिवा।
जय शिवा शिवा जय शिवा शिवा।
जय शिव ओंकारा शिव ओंकारा शिवा शिवा।
जय शिव ओंकारा शिव ओंकारा शिवा शिवा।।

❐❐❐

(९) मेरे ओङ्कार तुम मेरा सहारा बन के आ जाओ

मेरे ओङ्कार ! तुम मेरा सहारा बन के आ जाओ।
गिरा पतवार अब कर से, किनारा बन के आ जाओ।।
खड़े-बन्धु किनारे पर तमाशा देखते सारे।
तुम्हीं रक्षक मुसीबत में, हमें आकर बचा जाओ।।
जरा अब देर कर दोगे, तो डूबेगी मेरी नैया।
दया सागर दया करके, दया अपनी दिखा जाओ।।

❐❐❐

(१०) कदम कदम बढ़ाये जा

कदम कदम बढ़ाये जा।
ओ३म् गीत गाये जा।।
जिन्दगी है ओ३म् की।
ओ३म् पर लगाये जा।

जिन्दगी का कारवां।
कुछ दिनों ही है यहां।।
जितना तुझसे हो सके।
सुकर्म को बढ़ाये जा।

सत्य का आधार ले।
असत्य को तू त्याग दे।
पाप अत्याचार से।
मन को तू हटाये जा।।

देह है यह नाशवान।
मोह माया शक्तिवान।
पर्दा जो अज्ञान का।
जीव पर कटाये जा।।

जिन्दगी हो प्यार का।
काम हो उपकार का।।
धर्म और त्याग से।
नाम को कमाये जा।।

कह रहा है ओङ्कार।
कौन तेरे हैं रे यार।।
ओ३म् के ही प्रेम में।
मुक्ति पद को पाये जा।।

❐❐❐

(११) मैं किस विधि ब्रह्म बताऊँ ?

गुण ही गुण है, गुण ही मानू।
गुण से रहित, हीन गुण जानू।।
निर्गुण सगुण मैं उसको -पाऊँ।
मैं किस विधि ब्रह्म बताऊँ।।

आकारों में आकार वही है।
अति सूक्ष्म, साकार नहीं है।।
निराकार, साकार मैं पाऊँ।
मैं किस विधि ब्रह्म बताऊँ।।

जहाँ तीव्र वेग मन जाता।
ब्रह्म पूर्व उपस्थित पाता।।
चल-अचल मैं उसको पाऊँ।
मैं किस विधि ब्रह्म बताऊँ।।

समस्त जग के अन्दर रमता।
बाहर भी है उसकी समता।।
उसको भीतर बाहर पाऊँ।
मैं किस विधि ब्रह्म बताऊँ।।

न्याय-विधान दण्ड का दाता।
है दीन बन्धु, दयालु कहाता।।
रुद्र, सदा-शिव उसको पाऊँ।
मैं किस विधि ब्रह्म बताऊँ।।

''ओंङ्कार'' अनन्त सुखसागर।
सुध बुध रहे न उसमें जाकर।।
असीम ब्रह्म निज उर में पाऊँ।
मैं किस विधि ब्रह्म बताऊँ।।

❐❐❐

(१२) ओ३म् शङ्कर प्रणव गान

ओम् शङ्कर प्रणव गान गावो सभी।
मन को विषयों से अपने हटाओ सभी।।
ओम् शङ्कर प्रणव गान .....

जीव सारे हैं प्यारे ये समझो सभी।
प्रेम पावन प्रभु का तुम पावो सभी।।
ओम् शङ्कर प्रणव गान .....

हेच देखो न समझो किसी को कभी।
तुम्हें करनी है पूरी जो अपनी कमी।।
ओम् शङ्कर प्रणव गान .....

धन-बल पर अपने न फूलो कभी।
उसे जानो न निर्बल जो मन का बली।।
ओम् शङ्कर प्रणव गान .....

जरा देखो विचारो वो समझो सही
उसे गुरबत कहां जो है प्रणव धनी।।
ओम् शङ्कर प्रणव गान .....

❐❐❐

(१३) है ओमेश्वर पिता सबका

है ओमेश्वर पिता सबका, उससे फिर बड़ा क्या है।
इच्छायें करके भी देखा, इच्छाओं में ही धोखा है।।

जो बनता है, बिगड़ता है, वह जायेगा जो आया है।
जो छन-छन में बदलता है, उसी का नाम काया है।।

निकलने भी नहीं देती, माया की यह जंजीरें।
विषयों में फँसने वालों का, निकलना किसने देखा है।।

तू ही शिव है, तू ही शम्भू, तू ही सबका विधाता है।
जो हम उपभोग करते हैं, सबका ही तू दाता है।।

नहीं कुछ भी यहां अपना, जो अपना है, बेगाना है।
दुनिया में ये जो कुछ है, वो झूठा इक फ़िसाना है।।

फंसा धन-जन में क्यों ग़ाफ़िल ? वह पैग़ामें कूच आता है।
हे सचमुच में वही इन्सां, जो मुक्ति पद को पाता है।।

त्यागो मोह माया को, वो देखो आत्मा अपनी।
पुनः तुम मुक्त हो जाओ, यही पुरूषार्थ कहाता है।।

जरा दो ध्यान इधर अपना, सुनो 'ओङ्कार' बताता है।
जपो तुम ओ३म् को मन से, यही एक साथ जाता है।।

❐❐❐

(१४) मैं चला मिलन की आश लिये

तब अपना मन घबराता था, यह नया प्रभु से नाता था।
रुक-रुक लम्बी सांस लिए, मैं चला मिलन की आश लिए।।
कभी संकट घिर-घिर आता था कभी गगन आग बरसाता था।
जल थल कंटक पार किए, मैं चला मिलन की आश लिये।।
कभी भूख प्यास सताती थी, कभी टाँगें थक रूक जाती थीं।
कभी जंगल में भी बास किये, मैं चला मिलन की आश लिये।।
इस तरह सभी तूफानों से, हीरा मोती के खानों से।
मैं बढ़ा सभी को पार किए, मैं चला मिलन की आश लिये।।
बच रूप मोह के जालों से, विषय अग्नि के ज्वालों से।
फिर काम क्रोध को भस्म किए, मैं चला मिलन की आश लिये।।
'ओङ्कार' मिलन को आये अब, उपहार अपने को लाये अब।
वह आश प्रभु ने पूर्ण किये, मैं चला मिलन की आश लिये।।

❐❐❐

(१५) ओ३म् की उपासना क्यों न हम हैं कर रहे ?

ओ३म् की उपासना क्यों न हम हैं कर रहे।
सूर्य्य, चन्द्र, तारेगण, जिसके दम से जल रहे।।

वह महान शुद्ध है, वह महान चित्त है।
वह महान बुद्ध है, वह महान वित्त है।।
ओ३म् की उपासना .....
सूर्य्य, चन्द्र .....

नाथ है अनाथ का, दीन का वह बन्धु है।
है विशाल हाथ का, आनन्द का वह सिन्धु है।।
ओ३म् की उपासना .....
सूर्य्य, चन्द्र .....

वह अति समीप है, वह बड़ा ही दूर है।
वह अति प्रदीप है, वह बड़ा ही नूर है।।
ओ३म् की उपासना .....
सूर्य्य, चन्द्र .....
जो दृष्ट है, अदृष्ट है, उसी की सब विभूति है।
जो क्लिष्ट है, अक्लिष्ट है, उसी की सब सुनीति है।।
ओ३म् की उपासना .....
सूर्य्य, चन्द्र .....
वह विश्व का आधार है, वह बुद्धि से भी पार है।
वह तत्व का प्रसार है, वह वेद का ही सार है।।
ओ३म् की उपासना .....
सूर्य्य, चन्द्र .....
वह मात है, पिता है वह, वह बन्धु है वह मित्र है।
वह नाथ है, सखा है वह, वह स्वामी भी विचित्र है।।
ओ३म् की उपासना .....
सूर्य्य, चन्द्र .....
है ''ओङ्कार'' नित्य ही गा रहा गुणगान है।
पा रहा सुख शान्ति जो, सब उसी की शान है।।
ओ३म् की उपासना .....
सूर्य्य, चन्द्र .....

❐❐❐

(१६) क्यों लड़ता मूरख बन्दे जब चाह उसी 'ओङ्कार' की है।

हम ओ३म् कहें, वे अल्लाह कहें, मतलब तो उसके नाम से है।
हम धर्म कहें, वे दीन कहें, मतलब तो उसके काम से है।।
क्यों लड़ता मूरख .....

हम सूर्य्य कहें, वे आफ़ताब कहें, मतलब तो उसके आग से है।
हम समुद्र कहें, वे बहर कहें, मतलब तो उसके आब से है।।
क्यों लड़ता मूरख .....
हम गगन कहें, वे फलक कहें, मतलब तो उसके आस्मान से है।
हम विश्व कहें, वे ख़ल्क कहें, मतलब तो उसके इमकान से है।।
क्यों लड़ता मूरख .....
हम शशि कहें, वे कमर कहें, मतलब तो उसके चाँद से है।
हम वायु कहें, वे बाद कहें, मतलब तो उसके नाद से है।।
क्यों लड़ता मूरख .....
हम भूमि कहें, वे जमीन कहें, मतलब तो उसके फर्श है।
हम वर्ष कहें, वे साल कहें, मतलब तो उसके अर्से से है।।
क्यों लड़ता मूरख .....
हम स्वर्ग कहें, वे बहिश्त कहें, मतलब तो सुख स्थान से है।
हम सन्त कहें, वे फक़ीर कहें, मतलब तो उसके ज्ञान से है।।
क्यों लड़ता मूरख .....
हम जीव कहें, वे रूह कहें, मतलब तो उसी एक जान से है।
हम प्रेम कहें, वे इश्क कहें, मतलब तो उसी एक प्यार से है।।
क्यों लड़ता मूरख .....
हम पाप कहें, वे गुनाह कहें, मतलब तो उसी बदकार से है।
हम मुक्त कहें, वे निजात कहें, मतलब तो उसी छुटकार से है।।
क्यों लड़ता मूरख .....

❐❐❐

(१७) दुनियां यह दुःख की गीता, किसको सुना रही है।

दुनियां यह दुःख की गीता, किसको सुना रही है।
अपने किए का बदला, अपने ही पा रही है।।
बादर्द है ये दुनियां, बेदर्द कह रहे हैं।
दामन में लेकर खंजर, बाहर से गा रही है।।
आफ़ताब यह नया है, मग़रिब से है जो निकला।
परवाना बनके दुनियां जलने को जा रही है।।
मालिक के घर से बन्दा, था पाक प्रेम पाया।
मुहब्बत की है यों बिक्री-कौड़ी को जा रही है।।
चमन के गुल की इज्जत, खारों ने थी बचाई।
यारों ने फ़र्ज छोड़ा, इज्ज़त भी जा रही है।।
शर्मसार हैं परिन्दें, दरिन्दें भी जंगलों के।
नंगी बदन यह दुनियां, किस ओर जा रही है।।
अब कह रही है दुनियाँ, बन्दर से बने आदम।
थूके हुए को अपने, अपने ही खा रही है।।
है इन्सानियत का दावा वो खूंका है ये दरिया।
कैसी अजीब गंगा, उल्टी जो जा रही है।।
अब फर्ज कुछ नहीं है, बस हक का है जमाना।
नौराग गा रहे हैं, जिसको जो भा रही है।।
नादानी अब है अव्वल, एहसानमन्द होना।
धोखे की आग में यों, अब जान जा रही है।।
ख़ालिक नहीं है कोई, करतार खुद बने हैं।
बिना मल्लाह कामिल कोई नाव भी चली है ?
उल्टी समझ की दुनियाँ, उल्टी ही जा रही है।
अपने किए का बदला, अपने ही पा रही है।।

❐❐❐

(१८) दीदार उस दिलदार की

दीदार उस दिलदार की बस चाह है, एक चाह है।
मैं हूँ खादिम और वह मादर पेदर वो शाह है।।
जामे उल्फ़त पी चुका मख़मूर वो बेताब हूँ।
यह नग़मये दीवानगी मसरूर वो शादाब है।।
रक़ीबों की वो मजलिस में, कौन अब अग़ियार है ?
नुमायां हर में उसकी सूरत, उसका ही इज़हार है।
तग़ाफ़ुल शान महबूब है, निहां वह राज़ करता है।
बेताबी यहां तड़पने की, वहां बेताब करता है।।
मुहब्बत पाक सर्माया, फ़ेना से दूर हरदम है।
एनायत की नज़र जब हो, जिग़र बा नूर होता है।।

❐❐❐

(१९) प्रणव प्रभु के प्रेम में

प्रणव प्रभु के प्रेम में, जिसने लगाया अपना मन।
वह हुआ परम सुखी, हो गया निरोग तन।।
राग, द्वेष, अभिनिवेष, जीव के हैं ये कलेश।
ज्ञान परशु से नष्ट कर, पा ले प्रणव अनन्त धन।।
कटु, कुटिल, कठोर बात, काम, क्रोध, लोभ, घात।
छोड़ कुव्यवहार को, ठीक कर अपना चलन।।
मात, पिता, गुरु, सखा, सन्त विप्र, प्रभु महा।
पूज औ सत्कार कर, मधुर प्रिय हो वचन।।
दीन, दास, दुःख, दारिद्र, समाज के हैं ये छिद्र।
सुखी, स्वस्थ्य हों सभी, कर हृदय से तू यतन।।
वेद ज्ञान कोष हैं, प्रणव प्रदत्त तोष हैं।
पठन, मनन, ध्यान से नित्य इनका कर मथन।
विश्व की विभिन्नता, है प्रपञ्च द्वैत का।
प्रपंच परित्याग कर पा ले अद्वैत प्रणव शरण।।

❐❐❐

(२०) प्राणों से बढ़के प्यारा, ओङ्कार है हमारा

प्राणों से बढ़के प्यारा, ओङ्कार है हमारा।
गायक हैं हम इसी के, उद्‌गान ये हमारा।।
अति पूज्य वो निराला, यह ओम् नाम प्यारा।
यह ईश है हमारा, जगदीश है हमारा।।
जीवन में मैंने ढूंढा, पाया नहीं सहारा।
पितु मातु है हमारा, गुरुदेव भी हमारा।।
सागर अथाह दुनियाँ, कहीं दूर है किनारा।
मल्लाह बन के आ जा, इक आश है तुम्हारा।।
योनी असंख्य पाया, तापों ने है जलाया।
एक घूंट अब पिला दे, अमृत का है तू प्याला।।

❐❐❐

(२१) योगी जन गावत ओङ्कार

ब्रह्म नित्त, शुद्ध चित्त ओङ्कार
श्रेष्ठ वित्त, बुद्ध, सिद्ध वेदसार।
सूक्ष्म, अचल, जगतपति, निर्विकार,
दीन बन्धु, प्रेम सिन्धु, विश्वधार।।
योगी जन गावत .....
परम पूज्य, सुख स्वरूप, निराकार,
तेज पुञ्ज, बल स्वरूप, हर विकार।
परम मुक्त, परम ईश, परम्पार,
पूर्ण गुरु, पूर्ण ज्ञान, पूर्ण सार।।

❐❐❐

(२२) बन्दों घट-घट के वासी

बन्दों घट-घट के वासी।
सत्, चेतन, अविनाशी।।
बन्दों .....
पर विराग उर धरिके।
नयनन स्नेह अश्रुते भरिके।।
बन्दों .....
परहित चित लाई।
परम सुख पाई।।
बन्दों .....
काम, क्रोध भय हरि के।
ओम् हिया में धरि के।।
बन्दों .....

❐❐❐

(२३) कीर्तन-हरि ओम् तत्सत्

महामन्त्र है यह, जपा कर जपा कर।
हरि ओम् तत्सत्, हरि ओम् तत्सत्।।
पावन निराला, प्रणव-नाम प्यारा।
नहीं इससे बढ़कर है, दूजा सहारा।।
हरि ओम् तत्सत् .....
वेदों ने इसका है गुण-गाान गाया।
ऋषियों और मुनियों को, यह नाम भाया।
हरि ओम् तत्सत् .....
संसार सागर का है, यह किनारा।
दुखियों के जीवन का, केवल सहारा।।
हरि ओम् तत्सत् .....
इसी पर लगा दो, धन मन वो काया।
अमर वह हुआ, जिसके हृदय समाया।।
हरि ओम् तत्सत् .....

❐❐❐

(२४) कीर्तन - ओम् की ध्वनि लगे

ओम् की ध्वनि लगे,
कष्ट सब यही हरे।
संकट अथाह में, जीवन की राह में,
कष्ट जब तुम्हें पड़े, ओम् की ध्वनि लगे।.....
उषा प्रभात में, दिन हो या रात में,
याद जब तुम्हें पड़े, ओम् की ध्वनि लगे।.....
राजा के ठाट में, गुरबत की टाट में,
जीव जो जहाँ रहे, ओम् की ध्वनि लगे।.....
ध्यानी के ध्यान में, ज्ञानी के ज्ञान में,
भक्त जन हैं गा रहे, ओम् की ध्वनि लगे।.....
प्रेम की पुकार से, श्रद्धा विस्तार से,
शान्ति सुख पा रहे, ओम् की ध्वनि लगे।.....

❐❐❐

(२५) कीर्तन - सांसें सांसे ओ३म् नाम, बोल रे बन्दे।

ओ३म् ही परम सुखों का दाता।
ओ३म् ही व्यापक विश्व विधाता।।
सांचे सांचे ओ३म् नाम, बोल रे बन्दे।
सांसे सांसे ओ३म् नाम, बोल रे बन्दे।।
ओ३म् ही निर्गुण सगुण वही भाई।
ओ३म् ही शंकर रूद्र कहाई।।
आजे आजे, ओ३म् नाम, बोल रे बन्दे।
सांसे सांसे ओ३म् नाम, बोल रे बन्दे।।

ओ३म् ही कर्त्ता, धर्त्ता हर्त्ता।
ओ३म् कृपा भवसागर तरता।।
काजे काजे ओ३म् नाम बोल रे बन्दे।
सांसे सांसे ओ३म् नाम, बोल रे बन्दे।।

❐❐❐

(२६) उड़ जा हंसा देश

उड़ जा हंसा देश अपने, उड़ जा हंसा देश।
दूर दिशा का रहने वाला, आन पड़ा परदेश।।
उड़ जा ... ...
दिव्य-लोक का तू निवासी, त्यागा सुन्दर देश।
सुख-सरोवर छोड़ के मूरख, भोग रहा तू क्लेश।।
उड़ जा ... ...
लाख चौरासी योनि में तू, खा रहा है ठेस।
अमर रुप निज भूल बना तू, पामर, गीदड़, मेष।।
उड़ जा ... ...
परम-पिता को जब से छोड़ा, मिला न सुख का लेश।
चेत रे हंसा ! चेत रे हंसा ! खो न जीवन शेष।।
उड़ जा ... ...

❐❐❐

(२७) रथ - परिवर्तन

सारथी को उस रथ से क्या,
जिसके चक्के टूट गये।
अब सफर कहाँ तै होनी है,
जब रथ के पुर्जे छूट गये।।

रे सारथी ! बैठा क्या झकता,
जब रथ है जर्जर जाने दे।
मोह त्याग इस टूटे की तू,
रथ नवीन अब आने दे।।

यात्री को यात्रा है करनी,
निज लक्ष्य कहाँ वह पाया है।
रथ टूटा, है विघ्न उपस्थित,
क्यों विघ्नों से घबराया है।।

परम पद का अमर पथिक तू,
बाधाओं से क्या डरना।
अविनाशी तुझ अजेय सत्य को,
नाशवान से क्या करना।।

आलोक शून्य से दिव्य निरन्तर,
आता है यह शुभ सन्देश....।
थक कर रुकना नहीं सारथी,
नियराया अब पी का देश।।

अमोघ प्रेम का सफल पात्र तू,
अहम भाव सब है खोया।
स्वारथ का कहाँ गन्ध प्रेम में,
क्यों निराश हो तू रोया।

अमर सारथी, रथ नवीन चढ़,
प्रेम-पथिक बनकर जाना।
रे अनासक्त ! निर्द्वन्द्व ! निराले,
प्रेम-पुञ्ज को अपनाना।।

□□□

(२८) प्रेमरूपा भक्ति
(नारदमुनि कृत का भोजपुरी सारांश)

(1)
प्रीतम के प्यार से
दिल के पुकार से
प्यारे प्रभु के
रिझावे पड़ी हो

(2)
पलकन के ओट में,
गूंगन के होंठ में,
प्रीतम के अपना
छिपावे पड़ी हो।

(3)
हृदय के कूप में,
शान्ति अनूप में,
अपना प्रभु के.....
बैठावे पड़ी हो।

(4)
प्यारे के चाह में,
प्रीतम के राह में,
आफ़त हज़ारों .....
उठावे पड़ी हो।

(5)
जवानी के राग से,
विषयन के आग से,
प्रेमी के कुटिया.....
बचावे पड़ी हो।

(6)
स्वारथ के त्याग से,
भक्ति अनुराग से,
नाता प्रभु से....
निभावे पड़ी हो।

(7)
जाति अहंकार से,
कुल के उद्‌गार से,
भक्ति के निर्मल...
बनावे पड़ी हो।

(8)
तन मन के राग के,
जस, धन ओ भाग के,
प्रीतम के ऊपर....
मिटावे पड़ी हो।

(9)
न प्यार के ह्रास होय,
दिन दिन विकास होय,
प्रेम गंगा हमेशा....
बहावे पड़ी हो।

(10)
भगती के राह में,
सागर अथाह में,
जीवन के नैया....
चलावे पड़ी हो।

(11)
दुनिया के छोड़ के,
बन्धन के तोड़ के,
पागल, निराला....
कहावे पड़ी हो।

(12)
द्वि के अभाव में,
एकता के चाव में,
आपन-पराया....
भुलावे पड़ी हो।

(13)
आंखन के नीर में,
हृदय अधीर में,
प्रीतम के दुनिया....
बनावे पड़ी हो।

(14)
प्यारे के रूप में,
सबके स्वरूप में,
प्रीतम के छाया....
बसावे पड़ी हो।

❐❐❐

(२९) कीर्तन - ओ३म् गुरु ईश्वर

ओ३म् गुरु ईश्वर, ओ३म् गुरु राम।
ओ३म् गुरु शंकर, ओ३म् सत् नाम।।
ओ३म् गुरु व्यापक, ओ३म् गुरु धाम।
ओ३म् गुरु पावन, शुद्ध ओ३म् नाम।।
ओ३म् गुरु गुरुवर, ओ३म् गुरु प्राण।
ओ३म् गुरु रक्षक, धर ओ३म् ध्यान।।

❐❐❐

(३०) ओम् - शंकर की आरती

जय शिव ओङ्कारा, भज शिव ओङ्कारा।
ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा।। 1 ।।
ॐ हर हर हर महादेव .....
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै।
हंसानन गुरुड़ासन वृषवाहन साजै।। 2 ।।
ॐ हर हर हर महादेव .....
दो भुज सुन्दर चतुर्भुज अति सोहै।
तीनों रुप निरखते त्रिभुवन जन, मोहै।। 3 ।।
ॐ हर हर हर महादेव .....
अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ।। 4 ।।
ॐ हर हर हर महादेव .....
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अङ्गे।
सनकादिक गुरुड़ादिक भूतादिक सङ्गे।। 5 ।।
ॐ हर हर हर महादेव .....
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी।

सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी ।। 6 ।।
ॐ हर हर हर महादेव .....
ब्रह्मा, विष्णु, शिव भिन्न जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ।। 7 ।।
ॐ हर हर हर महादेव .....
ओम्-शंकर की आरती जो कोई गावै।
कहत शिवभक्त, वह शिवधाम पावै।। 8 ।।
ॐ हर हर हर महादेव .....

❐❐❐

(३१) ओङ्कार की आरती

हृदय का दीपक, जीव की बाती, प्राण का होवे तेल।
प्रेम अग्नि से दिया जला के, करें प्रभु से मेल।।
जगमग जगमग जले दीया उपकार की रे।
हम तो आरती उतारें ओङ्कार की रे ।।
थाल देह में धरा यह दीपक, काम पवन नहीं कोय।
अभ्यास हाथ से थाली पकड़े, चञ्चल मन नहीं होय।।
द्वार बन्द कर, हृदय मन्दिर में, अपने प्रभु को निहार के रे।
हम तो आरती उतारें ओङ्कार की रे ।।
तेज का तिलक ललाट पर शोभे, पावन हो मुस्कान।
तन, मन, धन, सब अर्पण करके प्राणनाथ धर ध्यान।।
वेद मंत्र की आरती गावें, अपने प्रभु को पुकार के रे।
हम तो आरती उतारें ओङ्कार की रे ।।
ज्ञान दीप की ज्योति से अज्ञान तिमिर फट जाये।
शुभ भावों की लपटें निकलें, दुष्ट भाव हट जाये।।
ओंकार परमानन्द को पावे अपनी सुधि विसार के रे।
हम तो आरती उतारें ओङ्कार की रे ।।

❐❐❐

(३२) शान्ति पाठ

(क)

पूर्ण ब्रह्म से, पूर्ण विश्व, पूर्ण हुआ है पूर्ण।
पूर्ण प्रभु से पूर्ण निकल कर, पूर्ण रहा वह पूर्ण।।

(ख)

हे ! ओङ्कार शान्ति के दाता ।
द्यौलोक शान्त हो, विश्व विधाता।।
अन्तरिक्ष शान्त कर, अपनी दया से।
हो शान्त, जल-थल, तेरी कृपा से।।
औषधियां शान्ति-दायक हो नाथ।
शान्ति देवें, वनस्पतियां, हे तात।।
विश्वदेवा, शान्ति को पावें।
निज ब्रह्म शान्ति अपनावें।।
सब कुछ शान्त, शान्त हो जाय।
शान्ति भी, शान्ति को पाय।।
सब दुख मिटे, जीवन हो शान्त।
हो शान्त, शान्त हो, शान्त।।

❐❐❐